- आधार का हिस्सा फिर से बढ़ने के लिए छोड़ दिया जाता है।

कटाई पश्चात प्रबंधनः

- तने को सावधानीपूर्वक छोटे टुकड़ों में काटें और छाया में सुखाएं।
- इसे जूट के बोरों में रखकर ठंडे और हवादार भंडार गोदाम में रखा जा सकता है।

पैदावारः

- पौधे से लगभग दो वर्षों में प्रति हेक्टेयर करीब 1500 किलो ताजा तने की उपज होती है, जिसका शुष्क भार 300 किलो रह जाता है।

राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड

आयुर्वेद, योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, सिद्धा और होम्योपैथी (आयुष) मंत्रालय
भारत सरकार
तृतीय तल, आयुष भवन, बी ब्लॉक, जी.पी.ओ. काम्पलेक्स,
आई.एन.ए., नई दिल्ली – 110023
दूरभाष: 011-24651825 | फैक्स : 011-24651827
ईमेल : info-nmpb@nic.in | वैबसाईट : www.nmpb.nic.in

नोट –कृषि प्राद्योगिक का विकास जामिया हमदर्द, हमदर्द नगर, नई दिल्ली–110062 द्वारा किया गया है।

गिलोय की खेती

साधारण नाम	:	गिलोय
वानस्पतिक नाम	:	टिनोस्पोरा कॉर्डिफोलिया
पर्यायवाची	:	मेनिनस्पर्मम कॉर्डिफोलियम वाइल्ड
कुल	:	मेनिनस्पर्मेसी
उपयोगी भाग	:	तना, जड़, पूरा पौधा
सामान्य उपयोग	:	मलेरिया, पुराना बुखार, मूत्र रोग, मधुमेह, गठिया, बदहजमी इत्यादि में प्रयोग किया जाता है।

राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड

आयुर्वेद, योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, सिद्धा और होम्योपैथी (आयुष) मंत्रालय
भारत सरकार

गिलोय

टिनोस्पोरा कॉर्डिफोलिया
कुल–मेनिनस्पर्मेसी

- गिलोय समूह में रहने वाला आरोही पौधा है पुराने तने 2 सेमी. व्यास वाले होते हैं शाखाओं के गठीले निशानों से जड़ें निकलती हैं तनों और शाखाओं पर सफेद अनुलंब दाग होते हैं इसकी छाल सलेटी–भूरी या हल्की सफेद, मस्सेदार होती है और आसानी से छिल जाती है।
- इसकी पत्तियां 5–15 सेमी. अंडाकार होती हैं। शुरू में ये झिल्लीदार होती हैं किंतु समय के साथ कम या अधिक मांसल हो जाती हैं।

जलवायु एवं मिट्टी:

- यह पौधा उप उष्णकटिबंधीय तथा उष्णकटिबंधीय जलवायु में जैविक तौर से भरपूर बलुई दोमट मिट्टी में उगाया जाता है।

उगाने की सामग्री:

- तनों की कटाई जून–जुलाई के दौरान की जाती है जो पौधारोपण की सर्वश्रेष्ठ सामग्री है।
- दो गांठों सहित 6–8 इंच की कटिंग सीधे रोपी जाती है।

नर्सरी की विधि

पौध तैयार करना :

- मुख्य पौधे से जून–जुलाई में प्राप्त तने 24 घंटों के अंदर खेत में सीधे रोपे जाते हैं।

पौधों की दर और पूर्व उपचार:

- 1 हेक्टेयर भूमि में पौधारोपण के लिए करीब 2500 कलमों की जरूरत पड़ती है।

खेत में पौधारोपण करना:

- **मिट्टी:** मध्यम काली से लाल

मिट्टी तैयार करना और उर्वरक का प्रयोग :

- जमीन की अच्छी जुताई, और खरपतवार से मुक्त किया जाना चाहिये।
- मिट्टी तैयार करते समय प्रति हेक्टेयर 10 टन उर्वरक और नाइट्रोजन की आधी खुराक (75 किलो) प्रयोग की जाती है।

पौधारोपण और दूरी :

- गांठों सहित तने की कटिंग को सीधे ही खेत में बोया जाता है।
- बेहतर उपज के लिए 3 मी. x 3 मी. की दूरी सही मानी जाती है।
- उगने के लिए पौधे को लकड़ी की खपच्चियों के सहारे की जरूरत होती है।
- झाड़ी या पेड़ उगाने से भी पौधे को सहारा मिल सकता है।

संवर्धन विधियां:

- 75 किलो नाइट्रोजन के साथ 10 टन उर्वरक की खुराक सही मानी जाती है अच्छी बढ़त के लिए करीब दो से तीन बार निराई–गुड़ाई की जरूरत होती है।
- बार–बार निराई व गुड़ाई करके कतारों में पौधों के बीच की दूरी को खरपतवार से मुक्त रखना चाहिए।

सिंचाई विधि:

- यह फसल वर्षा जनित स्थितियों में उगाई जाती है। तथापि, अत्यधिक शीत और गर्म मौसम के दौरान आकस्मिक सिंचाई लाभकारी रहेगी।

रोग और कीट नियंत्रण:

- किसी गंभीर कीट संक्रमण और बीमारी की जानकारी नहीं है।

फसल प्रबंधन

फसल पकना और कटाई:

- तने की कटाई पतझड़ के समय की जाती है जब यह 2.5 सेमी. से अधिक व्यास का हो जाता है।